पाठ 14. गुरुभक्त आरुणि

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को आदर्श शिष्य बनने की सीख देता है। इस पाठ से बच्चे समझ पाएँगे कि गुरु का स्थान सदैव ऊँचा होता है क्योंकि गुरु न केवल अज्ञान को दूर करता है अपितु हमारे जीवन को एक नई दिशा भी देता है। गुरु-शिष्य के संबंध को प्रकट करती यह कहानी गुरुजन की आज्ञा पालन की शिक्षा दे रही है।

पाठ का सारांश

महर्षि धौम्य के आश्रम में कुछ शिष्य शिक्षा ग्रहण करते थे। महर्षि के पास धान का एक खेत था जिससे आश्रमवासियों का काम चलता था। महर्षि अपने शिष्यों से पुत्र की तरह स्नेह रखते थे। एक बार मूसलाधार बारिश हो रही थी। महर्षि को चिंता हुई कि कहीं वर्षा का पानी खेत की मेड़ न तोड़ दे। उन्होंने आरुणि नामक शिष्य को अपनी चिंता बताई और खेत पर जाने को कहा। संध्या के समय आरुणि खेत पर पहुँचा तो उसने देखा कि मेड़ में दरार पड़ गई है जिससे पानी रिस रहा है। उसने मेड़ की दरार को भरने की बहुत कोशिश की परंतु कामयाब नहीं हुआ। अंत में वह मेड़ के साथ लेट गया और पानी को खेत में जाने से रोक लिया। ठंड के मारे उसका बुरा हाल था। बारिश रुकने पर जब महर्षि खेत पर आए तो आरुणि को इस हालत में देखकर अचंभित रह गए। उन्होंने आरुणि को वहाँ से उठाया और अपना दुलार दिया। वास्तव में, आरुणि की गुरुभक्ति आज भी सराहनीय है।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से मौन पठन करने के लिए कहें। बच्चों से पाठ संबंधित चर्चा करें। गुरु का महत्व समझाएँ।

- ❖ पूछें, क्या वे अपने बड़ों की आज्ञा पालन करते हैं या अपनी मनमानी करते हैं?
- ❖ उन्हें आरुणि कैसा लगा? क्या वे भी आरुणि की तरह अच्छा विद्यार्थी बनना चाहेंगे?
- ❖ उन्हें अच्छे विद्यार्थी के गुण बताएँ।
- ❖ यदि तुम आरुणि की जगह होते तो क्या करते! बच्चों को अभिव्यक्ति का अवसर दें।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।